रविवारीय

आचार्य चंद्रशेखर चतुर्वेदी
बी. एच. यू. वाराणसी

बिहार, वह भूमि जिसने दिनकर दिए, पर उसी धरती पर एक ऐसा कालखण्ड भी आया जब अराजकता और अपराध का अंधकार ही शासन का पर्याय बन गया. वह दौर जब भय, भ्रष्टाचार और बंदूक तीनों मिलकर राजनीति का नया गणराज्य रच रहे थे. वह समय, जब सत्ता के गलियारों में माफिया का रसूख कानून से बड़ा था. जब अपहरण उद्योग बन गया था. जब सामाजिक न्याय का संघर्ष जाति, अपराध और राजनीति के त्रिकोण में विलीन हो गया था. यही था लालू–राबड़ी युग का बिहार, जिसे इतिहास ने जंगलराज कहकर याद किया .बिहार की धरती ने विद्रोह भी देखे हैं और विचार भी. यह वही भूमि है जिसने जेपी, लोहिया और कर्पूरी को जन्म दिया, पर उसी मिट्टी ने देखा कि सत्ता कैसे अराजकता की शरणस्थली बन जाती है. थाने माफियाओं की चौकियां बन गए, और न्याय की किताबें अदालतों में रह गईं, जबकि फैसले अपराधियों के बंगले से निकलने लगे. नक्सलियों की बंदूकें खेतों में बोलती थीं, और राजनेताओं की सभाओं में अपराधियों की जयकार गूंजती थी. बिहार का नाम विकास नहीं, जंगलराज का पर्याय बन गया था.

बिहार के दो युग : भय से भरोसे तक

सन् 1990 से 2005 तक का बिहार वह कालखंड है जब राजनीति और अपराध, शासन और जाति, भय और सत्ता एक-दूसरे के पर्याय बन गए. लालू प्रसाद यादव और राबड़ी देवी के शासनकाल ने सामाजिक न्याय का नारा दिया, पर न्याय का अर्थ कानून नहीं, जातीय समीकरण बन गया.

राज्य के आंकड़े स्वयं गवाही देते हैं कि वर्ष 1990 से 2005 के बीच बिहार में हत्या के 18 हज़ार से अधिक मामले दर्ज हुए, 32 हज़ार से अधिक अपहरण हुए, 59 जातीय नरसंहारों में 600 से अधिक लोग मारे गए और यह सब उस शासन के दौरान जिसने खुद को गरीबों का मसीहा कहा.

उस समय के गांव-गांव में अपहरण उद्योग एक समानांतर अर्थव्यवस्था बन चुका था. डॉक्टर, इंजीनियर, व्यापारी कोई सुरक्षित नहीं. बंदूक की नली न्याय का नया विधान बन गई थी.

सामाजिक न्याय के नाम पर जो नारा उठा, वह अंततः सामाजिक प्रतिशोध में बदल गया. उच्च जातियों के विरुद्ध आक्रोश को राजनीतिक हथियार बनाया गया, और परिणामस्वरूप गांव-गांव में सेनाएं% बन गईं. भूमिहारों की रणवीर सेना, यादवों की लोरिक सेना, पासवानों की सूर्यसेना और बिहार एक बार फिर जातीय युद्धभूमि में बदल गया.

इस काल में बिहार के युवाओं का सबसे बड़ा सपना था राज्य से भाग जाना. रेलवे स्टेशनों पर दिल्ली चलो, मुंबई भागो जैसी बोलियां बिहार की नियति बन गईं. अराजकता इतनी गहरी थी कि शिक्षा के केंद्र बंद, उद्योग चौपट और सड़कें लूटमार की राह बन चुकी थीं. एक समय ऐसा भी आया जब बिहार के व्यवसायी अपहरण बीमा करवाते थे. माफिया राजनेताओं के घरों में रात्रिभोज करते थे, और मंत्री अपराधियों के लिए जमानतें करवाते थे. राजधानी पटना, जो कभी ज्ञान-संस्कृति की नगरी थी, अब अपराधियों की शरणस्थली बन चुकी थी. जंगलराज कोई राजनीतिक गाली नहीं थी, वह सामाजिक यथार्थ था, जिसे अदालत ने कहा और जनता ने भुगता.

नीतीश कुमार की आलोचनाएं अपनी जगह हैं पर इतिहास गवाह है कि उन्होंने बिहार को भय के भूगोल से विश्वास के युग में पहुंचाने की दिशा दी. लालू युग की राजनीति जाति के ज्वालामुखी पर टिकी थी. नीतीश युग की राजनीति शासन की साख पर खड़ी है. अब बिहार तय करेगा कि क्या उसे जाति की जुगाली करती राजनीति चाहिए या वह राज्यव्यवस्था जो न्याय, कानून और विकास के संयोग से नए युग की नींव रखती है.

लालू प्रसाद के साले साधु यादव उस दौर के प्रतीक थे. उनका नाम सुनकर पुलिस अफसर झुकते थे, और अपराधी निर्भीक घूमते थे. सीवान में मोहम्मद शहाबुद्दीन सांसद थे, पर असल में वे अपने इलाके के %सुल्तान% थे. उन पर 60 से अधिक हत्या, रंगदारी और अपहरण के मुकदमे दर्ज थे. उनके इशारे पर गवाहों को मार दिया जाता, पुलिस पर हमले होते, और सरकार खामोश रहती. पत्रकार राजदेव रंजन की हत्या, शहाबुद्दीन के गिरोह द्वारा की गई, उसी भयावह परंपरा की परिणति थी जो लालू शासन ने बोई थी. पूर्णिया का राजेश रंजन %पप्पू यादव% हत्या और फिरौती के मामलों में आरोपी होते हुए भी सांसद बना, जबकि गोपालगंज के साधु यादव थानों और तबादलों पर राज करते रहे. अपराध और सत्ता का यह गठबंधन बिहार की राजनीतिक संस्कृति का चेहरा बन गया था.

यही गठजोड़ चुनावी प्रक्रिया तक फैला. उस दौर में बूथ कैप्चरिंग बिहार की चुनावी संस्कृति का काला अध्याय बन गई. मतदान केंद्रों पर लाठियां और बंदूकें बोलतीं, बैलेट बॉक्स लूटे-फाड़े-जलाए जाते, महिलाओं और बुजुर्गों को लाइन से खदेड़ा जाता और पुलिस-प्रशासन मूकदर्शक बना रहता. लोकतंत्र की देह पर यह सबसे गहरी चोट थी.

इसी काल में राज्य के दक्षिण-मध्य जिलों में नक्सल आतंक ने बिहार की आत्मा को जख्मी किया. गया, जहानाबाद, औरंगाबाद, भोजपुर और अरवल में माओवादी कम्युनिस्ट सेंटर (स्न्नष्ट) और पीपुल्स वार ग्रुप (क्कङ्ख्त्र) ने गरीबों और भूमिहीनों की आड़ में वर्ग-संघर्ष का नारा उठाया, पर असल में यह नारा जातीय प्रतिशोध का औजार बन गया. रात के अंधेरे में ऊंची जातियों के गांव घेर लिए जाते, खेत जला दिए जाते, महिलाओं और बच्चों तक की हत्या की जाती. बथानी टोला (1996) में 21 दलितों की, लक्ष्मणपुर बाथे (1997) में 58 निर्दोषों की, सेनारी (1999) में 34 ग्रामीणों की और मियांपुर (2000) में 35 लोगों की नृशंस हत्या की गई. यह केवल हिंसा नहीं थी, यह उस शासन की चुप्पी थी जिसने इन घटनाओं को %सामाजिक न्याय का संघर्ष% कहकर राजनीतिक लाभ उठाया. कई स्थानों पर राजद के स्थानीय नेता नक्सलियों से मेल में दिखे. पुलिस को आदेश था इन मामलों में अधिक सख़्ती न दिखाओ. यही कारण था कि बिहार में %लाल आतंक% को सत्ता का मौन संरक्षण मिला और आम किसान असहाय होकर मरते रहे.

राज्य की इस निष्क्रियता ने ग्रामीण समाज को आत्मरक्षा के लिए मजबूर किया. 1994 में भोजपुर जिले के किसान ब्रह्मेश्वर सिंह %ब्रह्मेश्वर मुखिया% ने रणवीर सेना का गठन किया. नक्सल आतंक के विरुद्ध किसानों की आत्मरक्षा-सेना. यह संगठन सरकार की जगह खुद को नहीं रखना चाहता था. वह केवल यह कहते थे कि जब शासन रक्षक नहीं, भक्षक बन जाए तब आत्मरक्षा ही धर्म है.

भारत की नई अफगान नीति

डॉ. ब्रह्मदीप अलूने
विदेशी मामलों के जानकार

कूटनीति एक गतिशील और बहुआयामी प्रक्रिया है. तालिबान प्रशासित अफगानिस्तान में भारत के तकनीकी मिशन को दूतावास में बदलने के निर्णय से यह स्पष्ट हो गया है की बदलते वैश्विक परिदृश्य में कूटनीति अपेक्षाकृत ज्यादा व्यावहारिक और यथार्थवादी हो गई है और भारत ने भी इसे स्वीकार कर लिया है. अफ़ग़ानिस्तान दक्षिण एशिया,मध्य एशिया और पश्चिमी एशिया को जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण सेतु है. इसी कारण यह क्षेत्रीय संपर्क,व्यापार मार्गों और सामरिक संतुलन में विशेष भूमिका निभाता है. अफगानिस्तान के इसी महत्व को दृष्टिगत रखते हुए भारत उस तक अपनी पहुंच सुनिश्चित करना चाहता है. 2021 में तालिबान की सत्ता में वापसी को पाकिस्तान की लिए बेहतर स्थिति माना गया था लेकिन भारत ने राजनीतिक दूरदर्शिता दिखाते हुए तालिबान से सीमित संवाद बनाएं रखा तथा पूर्व की तरह ही अफगानिस्तान को मानवीय सहायता देना भी जारी रखी. इसके बेहतर परिणाम अब सामने आ रहे है. तालिबान और भारत के बीच बढ़ते राजनयिक सम्बन्धों तथा अफगानिस्तान और पाकिस्तान की सेना के बीच डूरंड रेखा पर हुए भीषण संघर्ष को शक्ति संतुलन की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है. इसे भारत के लिए रणनीतिक बढ़त तथा पाकिस्तान के लिए रणनीतिक चुनौती की तरह देखा जा रहा है.

भारत और अफगानिस्तान के आपसी संबंध ऐतिहासिक,सांस्कृतिक और रणनीतिक रूप से बेहद घनिष्ठ रहे हैं. अफगानिस्तान की राजनीति में भारत की भूमिका शांति,पुनर्निर्माण और स्थायित्व को केंद्र में रखकर रही है. अफगानिस्तान की राजनीति और पुनर्निर्माण में सक्रिय और रचनात्मक भूमिका को इस देश की जनता भी सराहती रही है. भारत ने अफगानिस्तान में कई विकास परियोजनाएं चलाई हैं,जिनमें संसद भवन,सलमा बांध और ज़रांज-दिलाराम हाईवे प्रमुख हैं. ये परियोजनाएं अफगान जनता के बीच भारत की सकारात्मक छवि बनाती हैं और भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ावा देती हैं. भारत का तालिबान के साथ संबंध कभी भी सीधे और स्पष्ट नहीं रहा लेकिन वर्तमान में यह संबंध राजनयिक संतुलन,सुरक्षा चिंताओं और रणनीतिक दूरदर्शिता पर आधारित है. यह माना जाता है की अफगानिस्तान में मजबूत रहने वाला देश मध्य एशिया से दक्षिण एशिया तक के व्यापार मार्गों पर प्रभाव डाल सकता है. यह क्षेत्र भारत-मध्य एशिया संपर्क योजनाओं के लिए भी अहम है. अफगानिस्तान की स्थिरता भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा हितों से जुड़ी है. भारत को आशंका रही है कि यदि अफगानिस्तान अस्थिर रहता है तो पाकिस्तान-प्रायोजित आतंकी संगठन वहां से भारत विरोधी गतिविधियां संचालित कर सकते हैं. तालिबान से बेहतर संबंधों के रहते भारत की सुरक्षा चिंताएं कम हो सकती है.

अफगानिस्तान भारत के लिए एक रणनीतिक साझेदार,सुरक्षा चुनौती और संपर्क मार्ग तीनों भूमिकाओं में महत्वपूर्ण है. दक्षिण और पूर्व में,अफ़ग़ानिस्तान की सीमा पाकिस्तान से लगती है. पश्चिम में ईरान से और इसकी उत्तरी सीमा मध्य एशियाई देशों तुर्कमेनिस्तान,उज़्बेकिस्तान और ताजिकिस्तान से लगती है. सुदूर उत्तर-पूर्व में,अफगानिस्तान चीन से सीमा साझा करता है. तुर्कमेनिस्तान और ईरान दोनों की सीमाएं अफगानिस्तान से लगती हैं और ये अजरबैजान की सीमा के भी करीब हैं. भारत की सामरिक सुरक्षा के लिए पाकिस्तान.चीन और अजरबैजान की चुनौतियां बढ़ी है,ऐसे में इन देशों पर रणनीतिक बढ़त लेने के लिए भारत का अफगानिस्तान में मजबूत होना बेहद आवश्यक है. अफगानिस्तान के एक और पड़ोसी देश ताजिकिस्तान तथा भारत के बीच राजनयिक, आर्थिक और रणनीतिक संबंध हैं,जिसमें भारत ने फरखोर में अपना पहला विदेशी सैन्य अड्डा स्थापित किया है. फरखोर एयरबेस ताजिकिस्तान के फ़रखोर शहर के पास स्थित एक सैन्य हवाई अड्डा है जिसका संचालन भारत और ताजिकिस्तान की वायु सेनाएं संयुक्त रूप से करती हैं. यह पाकिस्तान और चीन के करीब है इसलिए इसे यह सामरिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है.

ताजिकिस्तान की सीमाएं वाखान कॉरिडोर के पास चीन और अफगानिस्तान से मिलती हैं, जो इसे चीन-पाकिस्तान-अफगानिस्तान प्रभाव क्षेत्र से जुड़ने वाला एक संवेदनशील क्षेत्र बनाती हैं. भारत के लिए ताजिकिस्तान की रणनीतिक स्थिति का सबसे बड़ा महत्व यह है कि यह भारत को अफगानिस्तान और मध्य एशिया में निगरानी, सुरक्षा साझेदारी और सैन्य उपस्थिति का अवसर देता है. ताजिकिस्तान मध्य एशिया के उन गिने-चुने देशों में है जो भारत के साथ लगातार घनिष्ठ सैन्य और राजनयिक संबंध बनाए हुए हैं. इस क्षेत्र में इस्लामी चरमपंथ,नार्को-ट्रैफिकिंग और आतंकवादी नेटवर्कों के खतरे के मद्देनज़र ताजिकिस्तान एक रणनीतिक निगरानी चौकी की तरह कार्य करता है. भारत के लिए यह देश न केवल ऊर्जा और व्यापार का प्रवेशद्वार बन सकता है बल्कि यह चीन और पाकिस्तान के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने में भी अहम भूमिका निभा सकता है.

भारत द्वारा निर्मित ज़रांज-दिलाराम हाईवे अफगानिस्तान को ईरान के चाबहार बंदरगाह से जोड़ता है जिससे भारत को मध्य एशिया तक पाकिस्तान को बायपास करते हुए पहुंचने का वैकल्पिक मार्ग मिलता है. एशिया महाद्वीप की दो महाशक्तियां भारत और चीन की सामरिक प्रतिस्पर्धा समुद्री परिवहन और पारगमन की रणनीति पर देखी जा सकती है. चीन की पर्ल ऑफ स्प्रिंग के जाल को भेदने के तौर पर चाबहार बंदरगाह के रूप में भारत ने बेहद सामरिक दांव खेला था. अभी यह अमेरिकी प्रतिबंधों से प्रभावित है लेकिन परिस्थितियों के बदलते ही चाबहार भारत की सामरिक और आर्थिक क्षमताओं का केंद्र बन सकता है. इस बंदरगाह के प्रभाव में आते ही अरब सागर से उठती समुद्री हवाओं को ग्वादर के जरिए भारत भेजकर तूफान पैदा करने की पाक-चीन की कोशिशे पस्त पड़ सकती है. चाबहार पत्तन पाकिस्तान-चीन के महत्वाकांक्षी ग्वादर बंदरगाह से महज बहत्तर किलोमीटर की दूरी पर है. चाबहार से भारत, अफगानिस्तान और बलूचिस्तान तक सीधी पहुंच बनाने में कामयाब हो रहा है,यह पाकिस्तान और चीन की बैचेनी बढ़ाने के लिए काफी है. यह बंदरगाह ईरान के लिए भी रणनीतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है. इसके माध्यम से भारत के लिए समुद्री सड़क मार्ग से अफगानिस्तान पहुँचने का मार्ग प्रशस्त हो जायेगा और इस स्थान तक पहुंचने के लिए पाकिस्तान के रास्ते की आवश्यकता नहीं होगी. चाबहार से भारत की पहुंच अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण व्यापार गलियारा के रास्ते यूरोप तक हो सकती है.

भारत के लिए अफगानिस्तान एक रणनीतिक साझेदार, सुरक्षा और संपर्क मार्ग, इन तीनों मोर्चों पर महत्वपूर्ण है. दक्षिण और पूर्व में अफगानिस्तान की सीमा पाकिस्तान से लगती है जबकि इसकी उत्तरी सीमा मध्य एशियाई देशों तुर्कमेनिस्तान, उज्बेकिस्तान और ताजिकिस्तान से लगती है. अफगानिस्तान सुदूर उत्तर-पूर्व में चीन से सीमा साझा सकता है. तुर्कमेनिस्तान और ईरान, दोनों की सीमाएं अफगानिस्तान से लगती है और ये अजरबैजान की सीमा के करीब हैं. भारत की सामरिक सुरक्षा के लिए पाकिस्तान, चीन और अजर बैजान की ओर से चुनौतियां बढ़ी हैं.

गो संवर्धन और संरक्षण का संदेशवाहक गोपाष्टमी

कहा जाता है कि जहां गौ माता खड़ी होती हैं उस जगह का वास्तु दोष भी अपने आप ही खत्म हो जाता है. गौ माता का दूध अगर बच्चे पीते हैं तो बच्चे हृष्ट- पुष्ट और बलवान बनते हैं. उनकी बुद्धि भी तीव्र होती है. गौ माता के गोबर की धूनी घर में देने से नकारात्मक दोष समाप्त होते हैं. इसके साथ ही गौ माता के दान को महादान भी माना गया है.

आचार्य टेकनारायण उपाध्याय
वरिष्ठ अर्चक श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को गोपाष्टमी का पर्व मनाया जाता है. गोपाष्टमी के पर्व पर भगवान कृष्ण और गायों की पूजा होती है. मान्यता है कि गोपाष्टमी पर गाय की पूजा उपासना करने से 33 कोटि(प्रकार) देवी देवताओं का आशीर्वाद मिलता है और घर में सुख-शांति और समृद्धि आती है. पौराणिक कथाओं के अनुसार, इस दिन से भगवान कृष्ण ने गाय को चराना शुरू कर दिया था, इससे पहले वे केवल गाय के बछड़ों को ही चराया करते थे. इसी उपलक्ष्य में मथुरा वृंदावन समेत कई जगह इस पर्व को मनाया जाता है.

गाय को हिंदू धर्म में बेहद महत्वपूर्ण माना गया है और गाय को माता का दर्जा भी दिया गया है. गाय माता की सेवा करने से मात्र से हर मनोकामना पूरी होती है और मृत्यु के बाद गोलोक में स्थान भी मिलता है. साथ ही परिवार में सुख शांति बनी रहती है और जीवन में कोई संकट भी नहीं आता. मान्यता है कि गाय में 33 कोटि देवी-देवताओं का वास होता है और गाय को आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का स्वामी भी माना जाता है. गोपाष्टमी गायों की पूजा को समर्पित और उनके प्रति कृतज्ञता और सम्मान प्रदर्शित करने का त्योहार है. कई कथाओं में वर्णन मिलता है कि किस तरह भगवान कृष्ण ने अपनी बाल अवस्था में गाय माता की सेवा की है. गीता में भगवान कृष्ण ने स्वयं कहा है कि 'गवां मध्ये वसाम्यहम्' अर्थात् मैं गायों के बीच में ही रहता हूं. जिन बहनों ने भाई दूज पर भाइयों को तिलक नहीं लगा पाई हैं, वो इस दिन उन्हें तिलक लगा सकती हैं.

अमृत मंथन में जितने भी रत्न प्राप्त हुए थे उनमें से एक कामधेनु गाय माता भी थी, और शेष गाय उन्हीं की संतिती है. कामधेनु ऐसी गाय थी जो सबकी इच्छा पूरी कर दिया करती थी. और हिन्दू धर्म में गाय को बड़ा शुभ माना जाता है जो इसको पालन करते हैं, उनके घर में शुभता रहती है. इसलिए कहते हैं कि गायों को चारा देना और उसकी सेवा करना चाहिए. गौ माता को देव तुल्य समझा जाता है.

गोपाष्टमी का मुख्य उद्देश्य गायों की रक्षा और उनकी सेवा करना है. हमें सदैव गायों को सुरक्षित, प्रेमपूर्ण और देखभाल वाला वातावरण प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि वे कृष्ण की प्रिय हैं. ऐसा कहा जाता है कि जहाँ गौ सेवा की जाती है, वहाँ भगवान हरि असीम कृपा करते हैं. हम गायों के आशीर्वाद पर निर्भर हैं. हमें सदैव गायों की सेवा और देखभाल करनी चाहिए. गायें समृद्धि का विस्तार करती हैं और आसपास आध्यात्मिकता का निर्माण करती हैं.

व्यंग्य

खोमचा मोहब्बत वाला.....!

रवि उपाध्याय
(लेखक व्यंगकार और राजनीतिक समीक्षक हैं)

मोहब्बत की दुकान के कॉन्सेप्ट से प्रेरित होने के बाद हमने सोचा यार यह प्रोजेक्ट अच्छा है. सोचा चलो अपन भी एक मोहब्बत की दुकान खोल लेते हैं. यही सोचते हुए हम ने इसके लिए बैंक से लोन लेने का प्लान बनाया. हम अपनी सोच को लेकर बैंक पहुंचे . वहां हमने एक काउंटर पर बैठी मोहतरमा से कहा मैडमजी, लोन लेना है. किस से मिलना पड़ेगा ? मैडम ने अपनी मूड़ उठा कर हमारी तरफ़ देखा और बोलीं हूं.., काहे के लिए चाहिए लोन. हमने मुस्करा कर उनकी आंखों में झांकते हुए कहा मैडम जी एक दुकान खोलनी है . हमारी तरफ़ देखते हुए अपनी तिरछी सौम्य मुस्कान बिखेरते हुए उन्होंने पूछा काहे की दुकान खोलनी है भाई ? भाई शब्द सुनते ही हमारा मुंह का स्वाद थोड़ा कसैला सा हो गया.

हमने अपनी बोली में मिश्री सी घोलते हुए कहा मैडम जी मोहब्बत की दुकान खोलनी है. उसी के लिए लोन चाहिए. वे चौंक गईं और उन्होंने मेरी तरफ़ घूर कर देखाऔरआश्चर्य से पूछा क्या..? मोहब्बत की दुकान ! हमने गर्व से कहा जी हां,वही मोहब्बत की दुकान. उन्होंने मुस्कराते हुए पूछा कभी की है...? हमने गहरी सांस भरते हुए कहा, मैडम की थी पर रुसवाई मिली. परंतु मैडम अब मोहब्बत जिंदाबाद हो रही है. देश के सबसे बड़े सियासी परिवार के नौनिहाल मोहब्बत की दुकान को प्रमोट कर रहे हैं. उन्हें भी अब इसका चस्का लगा है. धीरे धीरे वे चोर से भी मोहब्बत करने लगेंगे. इसकी उम्मीद बेकार है.

मैडम कुर्सी से उठते हुए मुस्कुराईं और बोलीं आइए आपको बैंक मैनेजर साहब से मिलवाते हैं. चलते चलते वो थोड़ा रुकीं और उन्होंने मेरी तरफ मुखातिब होते हुए कहा अरे ! मैंने आपका नाम तो पूछा ही नहीं ? मैने कहा मैडम मुझे प्यारेलाल कहते हैं. मैडम मुस्करा कर बोली कहते हैं या आपका नाम प्यारेलाल ही है. मैं भी मुस्करा कर रह गया. मुझे लगा क्या कहीं यह मोहब्बत का असर तो नहीं है. मैं सोच में पड़ गया क्या मोहब्बत कर रही है असर धीरे धीरे.

इसी बीच बैंक मैनेजर का चैम्बर आगया. मैडम ने मैनेजर साहब से नमस्कार करते हुए उनको हमारा परिचय देते हुए कहा सर ये प्यारेलाल जी है. ये मोहब्बत की दुकान खोलना चाहते हैं और इसके लिए हमारे बैंक से लोन लेना चाहते हैं. बैंक मैनेजर ने कहा बैठिए. मैडम बोलीं सर में चलूं. बैठो स्वीटी आप भी बैठो. स्वीटी बोली सर काउंटर पर कस्टमर इंतजार कर रहे हैं. बैंक मैनेजर बोले अच्छा तो फिर ठीक है.

बैंक मैनेजर ने अपनी कुर्सी मेरी तरफ घुमाते हुए पूछा, हां तो प्यारेलाल जी आप मोहब्बत की दुकान के लिए लोन चाहते हैं ? हमने सिर हिला कर हांमी भरी. मैनेजर बोला प्यारे लाल जी भला मोहब्बत कोई दुकान पर बेचने वाली वस्तु या मॉल है ? हमने कहा सर एक नेता जी ने राष्ट्रीय स्तर पर इसे लांच किया है. बैंक मैनेजर बोले प्यारेलाल जी आप बहुत प्यारे और भोले आदमी लगते हैं. नेताओं के लिए मोहब्बत दुकान की वस्तु हो सकती है. हमारे तुम्हारे लिए नहीं. ये तो पूजा की वस्तु है. मोहब्बत बिकती नहीं है. बैंक मोहब्बत की दुकान के लिए लोन नहीं देते हैं. क्योंकि यदि मोहब्बत की दुकान के लोन मिलने लगा तो समाज नफरत से भर जाएगा. जगह जगह मोहब्बत की गुमटियां खुल जाएगी.

प्यारेलाल जी आपने पहचान फिल्म का वह गाना तो सुना ही होगा जिसमे कहा गया कि पैसे की पहचान यहां इंसान की कीमत कोई नहीं बच के निकल जा इस बस्ती से करता मोहब्बत कोई नहीं. ऐसी दुकानों पर शरीर बिकते हैं मोहब्बत नहीं. मोहब्बत कभी बिकती नहीं है, वो कुर्बानी देती है और जो बिकती है वह मोहब्बत नहीं वह स्वार्थ होता है, लालच होता है और होती है हवस. शायद यही कारण है कि राष्ट्रीय स्तर पर जो मोहब्बत की दुकान खोलने की घोषणा हुई थी वहां आज मोहब्बत के नाम पर नफरत का सामान हाइड्रोजन बम, एटम बम और तमंचा कट्टा दिखाए जा रहे हैं. वो दुकानें खुलने के पहले ही फ्लॉप हो गईं.

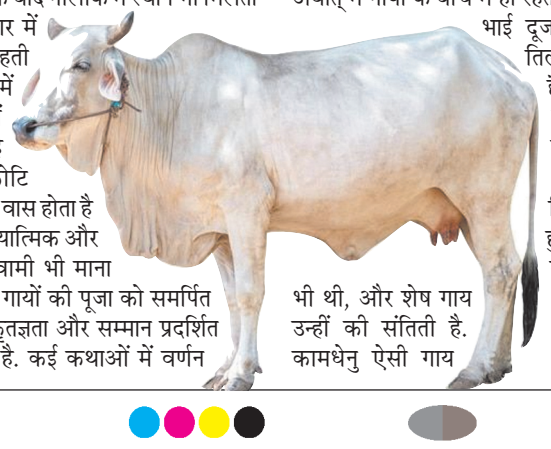

प्यारेलाल जी को यह बात समझ में आई. घर पर पत्नी को बताया कि उन्होंने मोहब्बत की दुकान का ख्याल छोड़ दिया है. उनकी पत्नी बोलीं जो तुम मुझ से नहीं कर सके उसकी दुकान खोलने चले थे. बुड़बको के चक्करों पड़ोगे तो एक दिन मोहब्बत बेचने के चक्कर में इमोरल ट्रैफिक एक्ट में जेल चले जाओगे. मोहब्बत की खरीद फरोख्त का काम तो रेड लाइट एरिया में होता है. इन्हें बेचने वाली यदि औरत होती है तो उसे मौसी कहते हैं और पुरुष हुआ तो उसे दल्ला कहते हैं. मेरी मानो, तुम तो चाट - गोल गप्पों की छोटी सी दुकान खोल लो और उसका नाम रखो मोहब्बत का खोमचा. खूब भीड़ आएगी और खोमचे पर महिलाओं के चटखारे और सी.. सी की आवाजें गूंजेंगी . महिलाओं की लाईनें लगी रहेंगी और में गोल गप्पों के लिए मोहब्बत की मिठास वाला पानी बनाया करूंगी. तुम्हारा खोमचा मोहब्बत वाला सोशल मीडिया के जरिए देश और दुनियां में वायरल हो जाएगा. लोग ढूंढते चले आएंगे खोमचा मोहब्बत वाला.